अध्याय 13

विश्वास का त्याग (भाग 1): भेदियों की कहानी

गिनती की पुस्तक में मुख्य घटना - और पुराने नियम के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक[1] - अध्याय 13 और 14 में दिया गया विवरण है। यह जंगल में इस्राएल का विश्वास का त्याग करना है, मूसा ने कनान में भेजे गए भेदियों की कहानी का वर्णन किया है, इस्राएल का उनके विवरण पर नकारात्मक प्रतिक्रिया, और लोगों के अविश्वास के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया।

पूरे कनान देश का सर्वेक्षण करने के लिए भेदिए भेजे गए थे (अध्याय 13)। जब वे चालीस दिनों के बाद लौटकर आए, तो उन्होंने बताया कि वह देश वास्तव में उपजाऊ था और उसके शहरों को मजबूत गढ़ वाले बनाए गए थे और उसके रहने वाले लोगों की संख्या बहुत थी और वे सब के सब बड़े डील-डौल के थे। भेदियों में से एक, कालिब ने जोर देकर कहा कि इस्राएली उस देश पर विजय प्राप्त कर सकते हैं; परन्तु अधिकांश भेदियों ने जोर देकर कहा कि उस देश पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, वह इसलिए क्योंकि वहाँ के लोग "संख्या में अधिक थे।" उन्होंने कहा कि इस्राएली उनकी तुलना में "टिड्डी" के समान थे। लोगों ने कालिब के शब्द को स्वीकार करने के बदले भेदियों के "बहुमत उल्लेख" पर विश्वास किया (अध्याय 14)।

भेदियों का चयन (13:1-16)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"कनान देश जिसे मैं इस्राएलियों को देता हूँ उसका भेद लेने के लिए पुरुषों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र के एक-एक प्रधान पुरुष हों।" [3]यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरुषों को पारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्राएलियों के प्रधान थे। [4]उनके नाम ये हैं: रूबेन के गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्मू; [5]शिमोन के गोत्र में से होरी का पुत्र शापात; [6]यहूदा के गोत्र में से यपुन्ने का पुत्र कालिब; [7]इस्साकार के गोत्र में से योसेप का पुत्र यिगाल; [8]एप्रैम के गोत्र में से नून का पुत्र होशे; [9]बिन्यामीन के गोत्र में से रापू का पुत्र पलती; [10]जबूलून के गोत्र में से सोदी का पुत्र गद्दीएल; [11]यूसुफ वंशियों में, मनश्शे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी; [12]दान के गोत्र में से गमल्ली का पुत्र

अम्मीएल; [13]आशेर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर; [14]नप्ताली के गोत्र में से बोप्सी का पुत्र नहूबी; [15]गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र गूएल। [16]जिन पुरुषों को मूसा ने देश का भेद लेने के लिए भेजा था उनके नाम ये ही हैं। और नून के पुत्र होशे का नाम उसने यहोशू रखा।

आयतें 1-3. पारान जंगल में, कादेश में (12:16; 13:26; व्यव. 1:19),[2] सीनै छोड़ने के कुछ महीनों बाद बारह भेदियों को चुना गया था। इस्राएलियों ने सीनै को "दूसरे महीने के" समाप्ति पर (10:11), जिव (अप्रैल-मई) के महीने में छोड़ दिया, और कादेश की यात्रा में कम से कम ग्यारह दिन (व्यव. 1:2) लग गए होंगे। भेदियों को "पहली पक्की दाखों के समय" (13:20) के दौरान कादेश से भेजा गया था, जो जुलाई का अन्त या अगस्त महीने का आरम्भ रहा होगा। **यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा** ने, **कनान देश ... उसका भेद लेने के लिए** (13:2, 3) प्रत्येक गोत्र में से एक एक करके बारह पुरुषों को चुना गया। "भेद लेने" के स्थान पर, एक अन्य अनुवाद में "पता लगाने" कहा गया है।

ये बारह पुरुष अगुवे थे: **वे उनके पितरों के प्रति गोत्र के एक-एक प्रधान पुरुष हों ... जो सब के सब इस्राएलियों के प्रधान थे**। वे उन लोगों में से नहीं थे जिनके बारे में पहले विभिन्न गोत्रों के प्रमुख के रूप में बताया गया था (अध्याय 1; 2; 7; 10)। सम्भवतः ये अगुवे पहले सूचीबद्ध प्रमुखों की तुलना में कम उम्र के और बलवान थे।

आयतें 4-15. जो पुरुष भेजे गए थे उनके नाम इन आयतों में दिए गए है:

गोत्र	*अगुवे*
रूबेन	**शम्मू**
शिमोन	**शापात**
यहूदा	**कालिब**
इस्साकार	**यिगाल**
एप्रैम	**होशे**
बिन्यामीन	**पलती**
जबूलून	**गद्दीएल**
मनश्शे	**गद्दी**
दान	**अम्मीएल**
आशेर	**सतूर**
नप्ताली	**नहूबी**
गाद	**गूएल**

आयत 16. उन पुरुषों में से एक को चुना गया। उसका नाम नून का पुत्र होशे था, परन्तु **नून के पुत्र होशे का नाम मूसा ने यहोशू रखा**। "होशे" का अर्थ है "उसने

बचा लिया है," जबकि "यहोशू" का अर्थ है "परमेश्वर उद्धार है।"[3] "यहोशू" के यूनानी रूप से हमें "यीशु" नाम प्राप्त हुआ है (देखें मत्ती 1:21)। पाठ यह नहीं बताता है कि कब या क्यों होशे का नाम बदला दिया गया; परन्तु पुराने नियम में कई अन्य नाम बदल दिए गए हैं, जिनमें "अब्राम" से "अब्राहम," "सारै" से "सारा" और "याकूब" से "इस्राएल" (उत्पत्ति 17:5, 15; 32:28) शामिल हैं।

यहोशू को पहले से ही "मूसा के अनुचर" के रूप में वर्णित किया गया है; उसने मूसा के पद और अधिकार (11:28) की रक्षा करने का प्रयास किया। पुस्तक के बचे भाग के दौरान, यहोशू (कालिब के साथ) साहसी पुरुष के रूप में उभरता है, जिसे उसकी विश्वासयोग्यता के लिए परमेश्वर द्वारा पुरस्कृत किया जाता है (14:6-10, 30, 38; 26:65; 32:11, 12)। अन्ततः, यहोशू, मूसा के स्थान पर इस्राएल का अगुवा बन जाता है (27:15-23; 32:28; 34:17)।

भेदियों के कार्य (13:17-20)

[17]उनको कनान देश का भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा, "इधर से, अर्थात् दक्षिण देश होकर जाओ, [18]और पहाड़ी देश में जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है, और उसमें बसे हुए लोगों को भी देखो कि वे बलवान हैं या निर्बल, थोड़े हैं या बहुत, [19]और जिस देश में वे बसे हुए हैं वह कैसा है, अच्छा या बुरा, और वे कैसी कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं, और तम्बुओं में रहते हैं या गढ़ अथवा किलों में रहते हैं, [20]और वह देश कैसा है, उपजाऊ है या बंजर है, और उसमें वृक्ष हैं या नहीं। और तुम हियाव बाँधे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना।" वह समय पहली पक्की दाखों का था।

आयतें 17-20. फिर मूसा ने भेदियों को उनके कार्य के साथ भेजते हुए आदेश दिया। उन्हें **नेगेव** (दक्षिण देश) और फिर उत्तर में पूरे **पहाड़ी देश** से होकर जाना था। वे निम्नलिखित बातों की जानकारी और विवरण तैयार कर रहे थे:

1. **देश** - यह **अच्छा** था या **बुरा**? क्या वहाँ **वृक्ष** थे? यह बंजर था या उपजाऊ? उन्हें वहाँ की सम्पन्नता के प्रमाण का विवरण वापस आकर कह सुनाना था। भेदियों का कार्य जुलाई के अन्त में या अगस्त के आरम्भ (13:20) का **समय पहली पक्की दाखों का** था। शायद लेखक ने यह इस बात को यह बताने के लिए जोड़ा कि क्यों भेदिए पक्की दाखों (13:23) को वापस लाने में सक्षम थे।
2. **लोग** - वे **बलवान** थे या **निर्बल**? वे **थोड़े** थे या **बहुत**?
3. **बस्तियों** - वे **तम्बुओं में रहते थे या गढ़ अथवा किलों में रहते** थे?

इस कार्य को करने का कारण नहीं दिया गया है। इसे एक उचित सैन्य योजना के रूप में माना जा सकता है: एक सेना को किसी देश पर हमला करने से पहले अपने शत्रु के बारे में जितना सम्भव हो उतनी जानकारी होनी चाहिए। स्पष्ट है,

भेदियों या सैनिकों का भेजा जाना पुराने नियम के समय में आम था। अन्य सैनिकों का भेजे जाने का वर्णन गिनती 21:32; यहोशू 2:1-24; 7:2, 3; और न्यायियों 1:23; 18:1-10 में किया गया है। यूसुफ ने अपने भाइयों पर आरोप लगाया था, जिन्होंने भेदिए बनकर कनान से मिस्र की यात्रा की थी (उत्पत्ति 42:9)।

भेदियों को भेजने का एक उद्देश्य इस्राएलियों को यह सुनाने के लिए प्रोत्साहित करना था कि परमेश्वर उन्हें कितना अच्छा देश देने जा रहा था, एक ऐसा देश जिसमें "दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं" (13:27)। एक और सम्भावना यह है कि परमेश्वर यह जानता था कि भेदियों को वहाँ क्या मिलेगा, उन्हें उस देश में भेज दिया और उन्हें वहाँ की जानकारी से इस्राएल के विश्वास की परखने के लिए वापस लाया। क्या उन्होंने परमेश्वर के किए प्रतिज्ञाओं को पूरा करने पर भरोसा किया या नहीं? यदि ऐसा है, तो उसके लोग परीक्षा में असफल रहे।

भेदियों द्वारा भेद लेना (13:21-24)

[21]इसलिए वे चल दिए, और सीन नामक जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में है, सारे देश को देख-भाल कर उसका भेद लिया। [22]वे दक्षिण देश होकर चले, और हेब्रोन तक गए; वहाँ अहीमन, शेशै, और तल्मै नामक अनाकवंशी रहते थे। हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहले बसाया गया था। [23]तब वे एशकोल नामक नाले तक गए, और वहाँ से एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए। [24]इस्राएली वहाँ से दाखों का गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया।

आयतें 21, 22. भेदियों ने वह किया जो उन्हें करने के लिए कहा गया था। उन्होंने कनान देश के बहुत दूर दक्षिण में **सीन नामक जंगल** में अपनी यात्रा शुरू की। यदि "मृत सागर और भूमध्यसागरीय दक्षिणी सिरे के बीच एक काल्पनिक रेखा खींची गई होती," तो "सीन नामक जंगल" उस रेखा के दक्षिण में स्थित होता।[4] इस जंगल से, भूमध्य सागर और यरदन नदी के बीच **दक्षिण देश** के पहाड़ी देश से होकर चले। भेदियों ने फिलिस्तीन के उत्तरी हिस्से से **रहोब तक, जो हमात के मार्ग में** यात्रा की। "रहोब" का स्थान पूरी तरह से सही नहीं माना गया है। कुछ सोचते हैं कि यह दमिश्क के उत्तर में स्थित था (देखें यहेज. 47:15-18), जबकि अन्य इसे लैश (दान) के निकट रखते हैं (देखें न्यायियों 18:27, 28)। कई पाठों में, "लेबो-हमात" या "हमात के प्रवेश द्वार" को इस देश का उत्तरी भाग माना जाता है (34:8; यहोशू 13:5; 1 राजा 8:65; 2 राजा 14:25; आमोस 6:14)। सही स्थान के बावजूद, यात्रा प्रत्येक दिशा में कम से कम दो सौ मील की दूरी पर होती।

जिन जगहों पर भेदियों को भेद लेना था, वह **हेब्रोन** था, जो दक्षिण देश में यरूशलेम नगर के अठारह मील दक्षिण पश्चिम में था। इस जगह को या तो इसकी विशालता के कारण या फिर अब्राहम और उसके वंशजों की कहानी में इसके महत्व

के कारण इस पर विशेष ध्यान दिया गया था (उत्पत्ति 13:18; 23:2; 25:9; 35:27-29; 50:13)। हेब्रोन के कुछ निवासियों का नाम रखा गया है और उन्हें **अनाकवंशी** (עֲנָק, *'अनाक)* माना जाता है। ए. नोर्टसिज ने तर्क दिया कि **अहीमन, शेशै, और तल्मै** उस जाति समूह के नाम हैं।[5] बाद में, इन लोगों को दो विश्वासयोग्य भेदियों में से एक कालिब ने पराजित किया, और उसने उस देश पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया (यहोशू 15:13, 14; न्यायियों 1:10, 20)।

एक और मूलभूत टिप्पणी में, पाठक को बताया जाता है कि **हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहले बसाया गया था**। इस संदर्भ में घटनाओं की सही तिथि जानना अनिश्चित है। पूर्वोत्तर डेल्टा में मिस्र का एक शहर "तानिस" के साथ "सोअन" की समानता करने के बाद आर. के. हैरिसन ने कहा,

> गिनती में दिए गए संदर्भ के अलावा तानिस की शुरुआत अज्ञात है। 13:22, परन्तु मिस्र के नए साम्राज्य काल (लगभग 1570-1150 ई.पू.) द्वारा इसे सेखेत दजानेट या "तानिस के मैदान" के नाम से जाना जाता था, जिसे इब्रानी में "सोअन के मैदान" (भजन 78:12, 43) के रूप में दर्शाया गया है। अस्पष्ट शुरुआत होने के कारण यह मिस्र का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केन्द्र बन गया (cf. यशा. 19:11, 13; 30:4; यहेज. 30:14)।[6]

हेब्रोन का कब्जा लगभग 3300 ई.पू. तक रहा। परिणामस्वरूप, आयत 22 में जिस नगर के निर्माण का उल्लेख किया गया है को पहले के संरचनाओं के पुनर्निर्माण या विस्तार का उल्लेख करना चाहिए।[7] शायद ये निर्माण परियोजनाएँ "दूसरी सदी ईसा पूर्व की पहली छमाही में" हिस्कोस अवधि के दौरान हुईं हों।[8] कोई संदेह नहीं कि इस मूलभूत टिप्पणी का उद्देश्य पाठकों पर यह प्रभाव डालने से था कि हेब्रोन कितना पुराना था।

आयतें 23, 24. हेब्रोन के निकट **एशकोल नाला** में भेदियों ने **अनारों और अंजीरों** के साथ, **दाखों** के कुछ गुच्छे नमूने के रूप में अपने साथ वापस ले जाने के लिए लिया। भेदियों द्वारा **दाखों को गुच्छे समेत तोड़** लेने के कारण उस "घाटी" का नाम "एश्कोल" रखा गया, जिसका अर्थ "गुच्छा" है। **दो पुरुषों** को **एक लाठी दाखों के गुच्छे समेत** ले जाने का तात्पर्य था कि यह उस देश की फलवन्त होने को प्रमाणित करता है।

भेदियों का भेद लेके आना (13:25-33)

पहले दिए गए आँखों देखी जानकारी देने में दस भेदियों की आम सहमति है (13:25-29)। उनके बाद, कालिब ने एक बहुत अलग विवरण दिया (13:30-33)। उस अकेले की दी गई जानकारी पर मण्डली की प्रतिक्रिया अध्याय 14 में दिया गया है।

बहु-भेदियों का भेद लेकर बताना (13:25-29)

[25]चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट आए। [26]और पारान जंगल के कादेश नामक स्थान में मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली के पास पहुँचे; और उनको और सारी मण्डली को संदेशा दिया, और उस देश के फल उनको दिखाए। [27]उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, "जिस देश में तू ने हम को भेजा था उसमें हम गए; उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है। [28]परन्तु उस देश के निवासी बलवान हैं, और उसके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हम ने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा। [29]दक्षिण देश में अमालेकी बसे हुए हैं; और पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं।"

आयतें 25-27. चालीस दिन के बाद वे उस **देश का भेद लेकर** लौट आए, तो बारह चुने हुए लोगों ने **मूसा और हारून और सारी मण्डली** को संदेशा दिया। उस **देश के फल उनको दिखाए** और कहा, **"उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।"** "दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं" एक प्रचलित कहावत है जो देश के उपजाऊ और फलवन्त होने की बात बताता है। इस तरह की अभिव्यक्ति अकसर पुराने नियम में पाई जाती है।[9]

आयतें 28, 29. जबकि, उन्होंने यह भी बताया कि **उस देश के निवासी बलवान** थे, **और उसके नगर गढ़वाले** थे और **बहुत बड़े** थे। उन्होंने वहाँ **अनाकवंशियों को भी देखा** था। अनाकीम वे लोग थे जिन्होंने इस्राएलियों के आने से पहले कनान पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने अनाकवंशियों को अपना पूर्वज बताया। स्पष्ट है, עֲנָק *(अनाक)* मूल रूप से जातिवाचक संज्ञा था जिसका अर्थ "गर्दन" या "हार" है और धीरे-धीरे "अनाकवंशी" "लम्बी गर्दन वाले" महा मानव लोगों की एक जाति का नाम बन गया। जेराल्ड एल. मटिंगली ने कहा, "बाइबल के सभी संदर्भ इस बात से सहमत हैं कि अनाक के वंशज लम्बे चौड़े थे, (व्यव. 2:10, 21; 9:2)।"[10] यहोशू 11:21, 22, 1 शमूएल 17, और 2 शमूएल 21:18-22 फिलीस्ती क्षेत्र के महा मानव लोगों का वर्णन करता है।

इसके अलावा, उन्होंने घोषणा की कि **दक्षिण देश में अमालेकी** बसे हुए हैं; और पहाड़ी देश में **हित्ती, यबूसी**, और **एमोरी** रहते थे; और **समुद्र के किनारे** और यरदन नदी के तट पर **कनानी** बसे हुए। संक्षेप में, उनका संदेश इसी प्रकार का था:

1. देश - यह अच्छा और फलवन्त था।
2. लोग - उस देश के निवासी बहुत और बलवान् थे, और देश के चारों ओर फैले हुए थे।
3. नगर - सके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े थे।

अल्पसंख्यक लोगों का संदेश (13:30-33)

[30]पर कालिब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा, "हम अभी चढ़ के उस देश को अपना कर लें; क्योंकि नि:सन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।" [31]पर जो पुरुष उसके संग गए थे उन्होंने कहा, "उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान् हैं।" [32]और उन्होंने इस्राएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, "वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डील-डौल के हैं। [33]फिर हम ने वहाँ नपीलों को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।"

आयत 30. इस बिंदु पर, भेदियों द्वारा कोई भी प्रशंसा या मण्डली द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं दी जाती है। फिर भी, संदेश के नकारात्मक भाव ने मण्डली को परेशान किया होगा क्योंकि आगे का आयत कहता है कि **कालिब ने प्रजा के लोगों को चुप कराने का विचार** किया। इतने भयानक शत्रुओं को हराने का प्रयास करने के विचार पर इस्राएली उनके भय से निराश थे। कालिब स्थिति के अन्य भेदियों के मूल्यांकन से असहमत नहीं था। उसने केवल इतना कहा, **"हम अभी चढ़ के उस देश को अपना कर लें।"** बाद में उसने समझाया कि क्यों उसका विश्वास था कि इस्राएल उस देश को अपना कर सकते थे: "यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर उसे हमें दे देगा" (14:8)। कालिब (और यहोशू, बाद में पाठ बताता है) को विश्वास था कि परमेश्वर उन सब बाधाओं को दूर कर सकते थे जो इस्राएल के सामने खड़ी थीं!

आयतें 31-33. भेदियों में से दस ने कालिब के इस दावे को निरस्त कर दिया कि इस्राएल उस देश को अपना कर सकता था, और उन्होंने कहा, **"उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान हैं।"** फिर उन्होंने उनकी योग्यता को उस देश की **निन्दा** (דִּבָּה, *दिब्बाह)* करते हुए अपने नकारात्मक विचार से बदल दिए। "निन्दा की" के स्थान पर, एक सही अनुवाद "झूठी बात की" हो सकती है। उन दस भेदियों के इन शब्दों ने "*बुरी खबर* की चर्चा की," अर्थात गॉर्डन जे. वेनहम के अनुसार, "उन्होंने न केवल उस देश के बारे में बुरी खबर दी, परन्तु उसके बारे में उनके आरोप झूठे ('झूठी खबर') हैं।"[11] विभिन्न संस्करण इस खबर को "देश की निन्दा करते," "निराशाजनक," "बुरा" या "प्रतिकूल" होने के बारे में बताते हैं।

दस भेदियों ने देश की दो तरीकों से निन्दा की। सबसे पहले, उन्होंने दावा किया, **"**[यह] **अपने निवासियों को निगल जाता है।"** इस दावे ने उनके मूल सन्देश का खंडन किया कि देश में "दूध और मधु की" धाराएँ बहती हैं (13:27)। यह इस तथ्य को संदर्भित कर सकता है कि कनान में लगातार युद्ध होते रहे।[12] यदि ये

भेदिए कनान में लड़ाइयों में मारे गए लोगों की चर्चा कर रहे थे, तब भी उनकी बातें अभी भी विरोधाभासी है, क्योंकि उन युद्धों ने उस नगर में जो गढ़वाले और बहुत बड़े थे, निवासियों को बसने से नहीं रोका था। दूसरा, उन्होंने लोगों के डील-डौल को देखा और कहा कि उनके मध्य **नपीलों** (נְפִילִים), नपीली जातिवाले, बड़े डील-डौल वाले लोग रहते थे। उन्होंने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि कनान के लोगों के सामने वे **टिड्डे के समान** दिखाई पड़ते और मालूम पड़ते थे। वे मानते थे कि इस तरह से उनके शत्रु उन्हें देखते थे। उन्होंने एक बात रखी, इस्राएल के जैसे अमहत्वपूर्ण लोग कभी भी बड़े डील-डौल के लोगों के रहने वाले देश पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

अनुप्रयोग

"कनान देश का भेद लेने" की उत्पत्ति (13:1-3)

व्यवस्थाविवरण 1:22, 23 के अनुसार, देश का भेद लेने का विचार लोगों के मन में उत्पन्न हुआ। परमेश्वर ने मूसा को (स्वयं को चुनने के बदले) भेदियों को चुनने के लिए कहा जिसकी आज्ञा उसने अभी तक नहीं दी थी। गिनती में एक अन्य मामले में, परमेश्वर ने किसी को कुछ करने के लिए आज्ञा दिया जिसे उसने मूल रूप से अस्वीकार कर दिया (22:20-22)। रॉय गेन ने बस सुझाव दिया कि गिनती और व्यवस्थाविवरण की बातें पारस्परिक रूप से आपस में मिलते नहीं हैं; यदि लोग मूसा से पूछते थे, तो वह परमेश्वर से पूछता था, और भेद के कार्य का कारण का श्रेय तब परमेश्वर या मनुष्य को दिया जा सकता था।[13] नोर्टसिज ने कहा कि "गिनती 'पहले कारण' [परमेश्वर की आज्ञा] पर केन्द्रित है, जबकि व्यवस्थाविवरण दूसरे कारण [इस्राएल का निर्णय] … का वर्णन करता है।"[14]

बड़े डील-डौल के लोगों से लड़ाई करना (13:25-33)

जब दस भेदियों ने मूसा को लौटकर संदेश सुनाया, तो उन्होंने कहा, कि कनान देश बड़े डील-डौल के लोगों से भरा हुआ था (13:28, 32, 33)। यही कारण था कि वे मानने लगे कि वे उसे जीत नहीं सकते। वे गलत थे क्योंकि परमेश्वर उन्हें बड़े डील-डौल के लोगों से जीतने में सक्षम (14:8, 9) बना सकते थे। लोगों को बड़े डील-डौल के लोगों से जीतने में मदद करने की परमेश्वर की योग्यता को दाऊद और गोलियत (1 शमूएल 17) की कहानी से में देखा जा सकता है। इसी तरह, हम भी कई विपरीत परिस्थितियों में जिसमें हम हार का सामना कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हम डर जाते हैं। जब हमें ऐसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, तो हमें याद रखना चाहिए कि हम इस पर काबू पाने में सक्षम हैं क्योंकि परमेश्वर हमारी ओर है। हमें उस पर भरोसा करना चाहिए, उसकी इच्छा पूरी करनी चाहिए, और विश्वास के साथ कदम उठाना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि वह हमें जीत दिलाएगा!

टिड्डे के समान दिखाई पड़ना (13:33)

दस भेदियों ने कहा, "और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे" (13:33)। जैसे ही भेदिए स्वयं को देखते थे, वैसे ही दूसरों ने उनके बारे में समझा। इसी तरह, हमारी स्वयं के विचार बड़े पैमाने पर निर्धारित करती हैं कि दूसरे हमें कैसे देखते हैं। मसीहियों को उस तरह का आत्मविश्वास दिखाना चाहिए जिस तरह का पौलुस ने दिखाया जब उसने कहा, "जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलि. 4:13)। हमें उस रवैये को व्यक्त करना चाहिए जब उसने लिखा था, " यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोम. 8:31)। उस तरह का शांत आत्मविश्वास-जो नम्रता के भाव से रचा गया हो, जो परमेश्वर में हमारे विश्वास और उसके महत्व की हमारी समझ पर आधारित है - दूसरों को हमारा सम्मान करने का कारण बन सकता है (भले ही वे हमारे संदेश को स्वीकार न करें)। आइए, "टिड्डे के समान" होने की सोच से बचें!

समाप्ति नोट

[1]इन अध्यायों की घटनाओं का वर्णन गिनती 32; व्यवस्थाविवरण 1:20-40; 8:2; भजन संहिता 95:10; 106:24-27; और आमोस 2:10; 5:25 में फिर से किया गया है। इनका उल्लेख नए नियम में भी किया गया है (1 कुरि. 10:1-5; इब्रा. 3:7-4:13). [2]अन्य अध्याय यह इंगित करते हैं कि कादेश पारान के जंगल और सीन के जंगल की सीमा पर था (13:21; 20:1)। [3]ए. नोर्टसिज, *गिनती*, ट्रान्स. एड वेन डर मास, बाइबल स्टूडेन्ट्स कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1983), 114. [4]जॉन एच. वाल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूस, एण्ड मार्क डब्ल्यू. चावलस, *दि आईवीपी बाइबल बैकग्राउंड कॉमेन्टरी: ओल्ड टेस्टमेन्ट* (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटरवर्सिटी प्रेस, 2000), 150. [5]नोर्टसिज, 117. [6]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 205. [7]उपरोक्त., 206. [8]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 238. [9]देखें निर्गमन 3:8, 17; 13:5; 33:3; लैव्य. 20:24; गिनती 14:8; 16:14; व्यव. 6:3; 11:9; 26:9, 15; 27:3; 31:20; यहोशू 5:6; यिर्म. 11:5; 32:22; यहेज. 20:6, 15. [10]जेराल्ड एल. मर्टिंगली, "अनाक," इन *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी,* एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यूयॉर्क: डबलडेय, 1992), 1:222.

[11]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 120. [12]नोर्टसिज, 120. [13]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 598-99. [14]नोर्टसिज, 113.